कविता

शीर्षक- वो पर्वतारोही पर्वत पर कैसे न चढ़ता।
लेखक- नाम- श्री यशराज सोनी
पद- निजी सहायक विशेषाधिकारी कार्यालय,
डीडवाना-कुचामन।

दोस्तों, आज हम सभी राजस्थान के विभिन्न विभागों में निजी सहायक के रूप में कार्यरत है। सबने इस मुकाम तक पहुंचने से पहले एक सफर तय किया है। प्रतियोगी परीक्षा रूपी पर्वत को पार कर अपनी सफलता का विजय पताका लहराया है। इस कविता को मैं सभी साथियों को समर्पित करता हुआ आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूं।

वो पर्वतारोही पर्वत पर कैसे ना चढ़ता!
जब सफर हुआ शुरू तो मन में उमंग, जीवन में उत्साह बहुत था,
मंजिल लगती कभी आसां कभी किस्मत का खेल था।
जब चढ़ने लगे पर्वत पर, तो साथी अनेक थे, सबके रास्ते और मंजिल एक थे।
मैं भी चला था तेज धूप में तपा था सुबह ही सर्दी में ठिठुरा भी मैं था,
पर यह क्या हो गया....पहली चोटी पर पहुंचने से पहले रस्सी से मेरा हाथ छूट गया।
मैं गिरा धम्म से लगा जैसे मेरा कोई सपना टूट गया, साथी चले गए सिर्फ मेरा ही हाथ छूट गया।
पहले वो शांति जैसे मेरे जीवन के खोने की थी, एक पल के बाद वो आवाज मेरे रोने की थी।
वो पर्वतारोही पर्वत पर कैसे ना चढ़ता।
पड़ा निश्चेतन उस धरा पर आंखों में अंधेरा छाया था, जीवन में काले बादल, उस रोज मुझे कौन बचाने बचाने आया था!
देखा नीचे से ऊपर तो साथी अपनी पहली विजय की खुशी में नाच रहे थे और हम जैसे-तैसे सुध-बेसुध काट रहे थे।
थोड़ा समय टला...जब सूरज की रोशनी मुझ पर आई, बेरंग में रंग, जीवन में उत्साह लाई।
वो पर्वतारोही पर्वत पर कैसे ना चढ़ता!
साथ में दो मार्गदर्शक (नितिन जी माथुर और दिनेश जी राठौड़) थे, ईश्वर के साक्षात्दर्शन थे।
मिला हौसला, पकड़ा इस बार रस्सी को कस के था, फिर से चल पड़ा, रोके रुकने को न था। हवाओ का रुख और उजाला भी पक्ष में था, भाग्य भी बस में था।
खोने को कुछ भी नहीं और पाने को पूरा पर्वत था। और अंतत: मैं पर्वत पर पहुंच गया, साथी (बलवंत/अशोक/सचिन/हर्ष/मदन/गणेश) एक अतिरिक्त विजय पताका लिए खड़े थे, विश्वास उनके भी अटल थे, आऊंगा मैं जरूर रोज कहते सबसे थे।

पर्वतारोही पर्वत पर कैसे ना चढ़ता!
लौटा जब घर को तो मां (श्रीमती सुमित्रा देवी) की आंखों में खुशी के आंसू और पिता (श्री प्रकाशचंद्र जी) की मुस्कान काफी थी, सफर की थकान गायब थी।
अब मन करता है एक पर्वत और चढ़ लूं, कुछ किताबें और पढ़ लूं, पर रूका यह सोच कर कि पहले थोड़ा मोह-माया में जी लूं। धन्यवाद।